लो यह देखो क्या है !!!

प्रिय सुहृद्वर्ग! वर्त्तमान समयमें अनेक प्रकारके तन्त्रशास्त्र सम्बन्धी विज्ञापन जिधर तिधर देखनेमें आते हैं, परन्तु वास्तवमें वे सब ग्रन्थ वैद्यकके सिद्ध होते हैं। यथार्थ तन्त्र उसीको कह सकते हैं जिससे उभयत्र साधुवादकी प्राप्ति हो। जब भगवान् भूतनाथने समस्त सिद्ध मन्त्रोंको कील दिया था उस समय केवल साबर मन्त्रही कीले जानेसे मुक्त रहे थे। साबर मंत्रोंके अतिरिक्त अन्य मन्त्रोंका कलियुगमें सिद्ध होना दुस्तरही नहीं, वरु असम्भव है, परन्तु साबर मंत्र तत्काल अपनी सिद्धिका परिचय देते हैं,। इन मन्त्रोंका जप करके सिद्ध करनेकी विशेष आवश्यकता नहीं; लिखाहै कि--

अनमिल अक्षर अथ न जापू।
प्रकट प्रभाव हमेश प्रतापू॥

जिनको असली साबर तन्त्र लेनाहो, पुस्तक हाथमें थामतेही सिद्ध बन जानेकी कामना हो अथवा सच्चे सिद्ध बनकर इस लोकमें द्रव्य और यश एवं अमुत्रमें मोक्षकी कामना हो तौ इसी असली ग्रन्थको खरीदो॥

संशोधकः टिप्पणीकारकश्च-

पण्डितमण्डल कार्यालय
२७ जौलाय १८९८

व्रजरत्नभट्टाचार्यः
पट्टुवरगंज,
मुरादाबाद.

भूमिका।

प्यारे पाठको ! आज आपकी चिरकालीन आशा पूर्ण होगई, जिस अमूल्य पुस्तकका मिलना आशातीत समझा जाता था आज वह अमूल्य रत्न हम दोनों हाथसे लुटा रहे हैं। समस्त यन्त्र मन्त्र और तन्त्रोंको जिस समय महादेवजीने कील दिया था उसके अनन्तर सावरमन्त्र निर्माण करे थे। सावर मन्त्र कितने सुसाध्य हैं कहनेकी तो कोई आवश्यकता नहीं परन्तु हमारे पाठक इतनेहीमें समझ जायँगे कि सावर मन्त्रोंको दो चार वार पढकर प्रयोग करनेसे सब प्रकारकी कामनायें सिद्ध होजाती हैं। मारण, मोहन, वशीकरण आदिका साधन भूत प्रेतादिकोंकी वाधाको दूर करना, सर्प आदिक बढे २ विषैले जीवोंका विष दूर कर उनको वशमें कर लेना इत्यादि विषयोंमेंसे कौनसे ऐसे विषय हैं कि जिसको मनुष्य इन सावरमंत्रके द्वारा वातकी वातमें सिद्ध न करसकता हो।

१ इसमें सब मंत्रोंकी विधि मंत्रोंके नीचे लिखी गई है और जिनकी विधि कुछ नहीं लिखी है उन मन्त्रोंको ग्रहणमें जपकर सिद्ध कर लेना चाहिये। और यंत्रोंमें जहां कहीं देवदत्त लिखा है वहां उसका नाम लिखना चाहिये जिसके ऊपर प्रयोग करना हो।

२ मंत्रशास्त्रोंको महादेवजीने कील दिया है उनका प्रचार देखकर हमने इस परम गोप्य ग्रन्थका प्रकाश करना उचित समझा क्योंकि उन कीलित मंत्रोंका अनुष्ठान करनेसे वे सिद्धि होने दुस्तर हैं, इसी कारण मनुष्योंकी मंत्रशास्त्रमें अविश्वाससा हो गया है। हमारा मन्तव्यभी मंत्रशास्त्रको गुप्तही रखनेका है परंतु मंत्रशास्त्रका गौरव घटता देखकर यह पुस्तक प्रकाश की गई है अन्तमें हम उन तांत्रिकोंसे जो मंत्रशास्त्रके ग्रन्थोंको गुप्त रखना उत्तम समझते हैं क्षमा करनेकी प्रार्थना करते हैं क्योंकि जगत्प्रसिद्धमहात्मा कामराजजी शाक्तके प्रधान शिष्य दिगम्बर कालिकानन्दजीसेभी छापनेकी आज्ञा लेली है और यह विषय तांत्रिक सभासेभी निश्चय हो गया है कि मंत्रशास्त्रकी मर्यादा रखनेको एक ग्रंथ अवश्य प्रकाशित होना चाहिये इसी कारण हम क्षमा प्रार्थना करते हैं कि कोई महाशय हमारे ऊपर किसी प्रकारका दोषारोपण न करैं।

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

बृहत्साबरतन्त्रकी विषयानुक्रमणिका।

इति अनुक्रमणिका समाप्त ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवोक्तं

बृहत्साबरतन्त्रम् ।

[विधानसहितं]

पार्वत्युवाच ।

भगवन् मम प्राणेश सर्वलोकशिवंकर ।
बृहत्साबरतन्त्राणि वक्तुमर्हस्यशेषतः ॥

पार्वतीजी बोलीं, हे हमारे प्यारे प्राणनाथ ! हे समस्त संसारके मंगलकर्ता ! हे भगवन् ! हे महादेव ! आप सम्पूर्ण बृहत्साबरतंत्र यंत्र और मन्त्रोंको मुझसे वर्णन करिये ॥ १ ॥

महादेव उवाच ।

वक्ष्याम्यहं साबराणि मन्त्रतन्त्राणि पार्वति ।
सर्वकामप्रसाधीनि शृणुष्वावहिता प्रिये ॥ २ ॥

महादेवजी बोले, हे प्यारी पार्वति ! जितने साबरमन्त्र और तन्त्र हैं, जिनसे कि समस्त कामना

सिद्ध हो जाती है, उनको हम तुमसे कहते हैं तुम सावधान चित्तसे श्रवण करो ॥ २ ॥

तत्रादौ वशीकरणमंत्रः ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनायत्रिपुरवाहनाय । अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मंत्रको सिद्ध योगमें १०८ वार जपे और सुपारी पढके दे तो वश्य होता है ॥

स्त्रीवशीकरण ।

ॐ नमो कटविकटघोररूपिणी अमुकं मे वशमानय स्वाहा ॥

प्रथम इस मंत्रको ग्रहणमें १०००० वार जपे फिर रविवारको इससे अभिमन्त्रित करके भोजन करे और भोजन करते समय जिसे वशमें करना चाहे उसका नाम लेता जावे तो वह शीघ्र वशीभूत होती ह ॥ २ ॥

अन्यच्च ।

ॐ चामुण्डे जय २ वश्यंकारि जय २ सर्वसत्वान्नमः स्वाहा ॥

इस मंत्रको १०००० वार जपे फिर रविवार या

पाठकोंको ध्यान रखना चाहिये कि जहां " अमुक " लिखा हो वहां व्यक्तिका नाम लेना चाहिये जिसके ऊपर प्रयोग करना है ॥

भौमवारको इस मन्त्रसे पुष्प अभिमन्त्रित कर जिसे दिया जायगा वह अवश्य वश होगा॥

अन्यच्च।

ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुखरंजनि सर्वेषां महामाये मातंगे कुमारिके नन्द २ जिह्वे सर्वलोक वश्यकारि स्वाहा॥

इसका १०००० जप करनेसे यह मंत्र सिद्ध होता है॥

श्वेतापराजितामूलं चन्द्रग्रस्ते समुद्धृतम्।
अंजिताक्षो नरस्तेन वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्॥ १॥
ताम्बूलं रोचनायुक्तं तिलकेन जगद्वशम्।
ताम्बूलेन प्रदातव्यं भोजने पानमेव च॥ २॥
शिलारोचनताम्बूलं वारुणीतिलके कृते।
संभाषणेन सर्वेषां वशीकरणमुच्यते॥ ३॥
शिरोनिवेष्टितं कृत्वा तेनैव तिलकं कृतम्।
अदृष्टं तं न पश्यंति नार्यो वा पुरुषाश्च वा॥ ४॥
ग्राह्यं शुक्लत्रयोदश्यां श्वेतगुंजां समूलकम्।
तांबूलं च प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम्॥ ५॥

चंद्रग्रहणके समय श्वेत विष्णुक्रान्ताकी जड लेकर उसका अंजन नेत्रोंमें लगानेसे निःसंदेह त्रिभुवन वशीभूत होता है॥ १॥ ताम्बूलमें गोरोचन मिलाकर तिलक करनेसे अथवा ताम्बूलके साथ या

भोजनमें मिलाकर भक्षण करादेनेसे जगत् वशीभूत होता है ॥ २ ॥ मनसिल, गोरोचन और ताम्बूल इन तीनोंको मिलाकर तिलक लगावे तो तिलक लगानेवाला जिससे संभाषण करे वह वशीभूत होता है ॥ ३ ॥ शिर निवेष्टित करके तिलक करे तो उससे अदृष्ट हो जावे उसे कोई स्त्री पुरुष नहीं देख सके ॥ ४ ॥ शुक्लपक्षकी त्रयोदशीको सफेद घुँघुचीको जडसहित लेके पानके साथ देनेसे सब लोक वश हो जाते हैं ॥५॥

अन्यदपि ।

या असीन या फासीन हमारे दिलसे फलानेका दिल मिला दे ॥

जिसपर मंत्र चलाना हो उसके संमुख अग्निके निकट बैठके उसे गूगल लोबान धूप दिखावे और जब उसकी दृष्टि उस धूपके ऊपर पडे तब उसे मंत्र पढ अग्निमें गिरा देवे। इस प्रकार २१ बार होम करे तथा ७, १४ या २१ दिन इसीतरह होम करे तो वह तत्काल वश होगा। यह मन्त्र स्त्रियोंके ऊपर अपना प्रभाव शीघ्र ही उत्पन्न कर देता है ।

अन्यच्च ।

पिंगलायै नमः ।

इस मंत्रका २०००० जप करे ।

भ्रमरस्य पक्षयुगं शुकमांससमन्वितम् । स्वानामिकारुधिरं च कर्णमलं यं स्वादयति स वश्यो भवति ॥ ६ ॥

दोनों पक्षसहित भ्रमर व शुकमांस एकत्रित करके अपनी अनामिकांगुलीके रुधिरमें कानका मैल मिलाकर जिसको भक्षण कराया जाय वह अवश्य ही वश होता है ॥ ६ ॥

अन्यच्च ।

ॐ हुं स्वाहा ।

कृष्णापराजितामूलं ताम्बूलेन समन्वितम् ।
अवश्यं वै स्त्रियो दद्यात् वश्या भवति नान्यथा ७॥

काली विष्णुक्रान्ताकी जड ताम्बूलमें मिलाकर " ॐ हुं स्वाहा " इस मंत्रसे अभिमन्त्रित कर जिस स्त्रीको भक्षण कराया जाय वह निःसन्देह वश होगी ॥ ७ ॥

अन्यच्च ।

ॐ पिशाचरूपिण्यै लिंगं परिचुम्बयेत् । नागं विसिंचयेत् । अनेन मंत्रेण यस्य नाम्ना एकविंशतिवारं प्रातः मुखं प्रक्षालयेत् । अथवा जलमभिमंत्र्य ददाति स वश्यो भवति ॥

अन्यच्च ।

ॐ नमो भगवति पुर २ वेशनि पुराधिपतये सर्वजगद्भयंकारि ह्रीं भै ॐ रां रां रं रीं क्लीं वालौसः पंचकामबाणसर्व श्रीसमस्तनरनारीगणं मम वश्यं नय नय स्वाहा ॥

इस मंत्रको १५ वार पढके अपने मुखके ऊपर हाथ फेरकर जिधरको देखे उधरके लोक वश्य होते हैं ॥

अन्यच्च ।

ॐ नमो भगवति चामुण्डे महाहृदयकंपिनि स्वाहा ॥

इस मंत्रसे २१ वार बीडेको अभिमंत्रित करके जिसे दिया जाय वह वश होगा ॥

अन्यच्च ।

क्लं क्लौं ह्रीं नमः ।

इस मंत्रका तीनों समय १००० जप करे तो पातालवासी वशमें होते हैं । १०००० हजार जप करे तो देवता वशमें होते हैं । १०००० जप करे तो त्रिलोकी वशमें हो जाती है ॥

अन्यच्च ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके सर्वान् मम वश्यं कुरु कुरु सर्वान् कामान् मे साधय २ । अनेन मन्त्रेण यस्य नाम्ना एकविंशति वारं प्रातः मुखं प्रक्षालयेत् । अथवा जलमभिमंत्र्य ददाति स वश्यो भवति ॥

प्रेत बरावेका मंत्र ।

बांधो भूत जहां तु उपजो छाड़ो गिरे पर्वत चढाइ सर्ग डुहेलीपृथिवी तुजभिझिलिमिलाहि हुंकारे हनुंवंत पचारइ भीमा जारि जारि जारि भस्म करे जों चांपेसींउ ॥

आत्मफूँकन मंत्र ।

ॐ मुरतोंका गंडा अष्ट बेताल आठों वायु तीसोरहसे छेद भेदकी ज्ञानमो रंगे नकरुद्यामो रमा नारायणी सप्त पाताल जानि मोर काज मोहिसाडारे तइथिला विकिटार आस आस विकिटार तो सोरषीमो गोरषी कारसी आकार बीज गोरषी वज्र करथिवो॥

बाबाआदममंत्रः ।

गुरु सत्यं बिस्मिल्लाहका पूज्योमा आवनकार आदि गुरु सृष्टिकरतार वेद वहर तारांहि एकी आइ युग चारि तीन लोक वेद चारे पांचों पांडव छव

मारग सात समुद्र आठ वसु नव ग्रह दश रावण ग्यारह रुद्र बारह राशि तेरहमोल चौदह शोक पंद्रह तिथि चारि खानि चारि बानि पाँच भूत चौरासी आत्मा लाषति अथानि अष्टकुली नाग तैंतीसकोटि देवता आकाश पाताल मृत्यु लोक रात दिन पहर घरी दण्ड पल विपल महारथ सांपिघरमेंहौ अब जो कछु फलानेके पीरा देव दानव भूत प्रेतराखीसुजानु-विनानु किताकरापादितावा क्षागाठिमुठिरपणी मु-खणी बिलनी फोठौरीगढहीनीनाईकपोलाइअधौगी करणसूलवायुसूलुणसुरूनन्हरूवागडहरूवाजगरहू करक्तपीतमूत्रकुक्षडाढारहप्रमेहगोलापलीहानहरू-आअहोगासोगाअर्धशीशी कुटीलुतीवुवारीमिरगी कमलवांड हंडी आनुवावुहथेलगंडक्कवायुचोटफेट-दिताकितालापालगायापरपितीलंघाउलंघाबाटघाट बाहर निसार पसार सांझ सकार कौनहु प्रकार होइ हाडउदवार चामनाडी अर्द्धअंगजहारूसी दोहाइसलेमानपैगम्बरकी तुरन्त बिलाही पीनजाही नातरु सवा लाख पैगंबरकी वज्रथाप नवनाथ चौराशी सिद्धिके सराप शेषसरपूदी अहि आपीर मनेरीकी शक्ति बाबा आदमकी भक्ति जारिभस्म होइ जाय जाहि निहिनिषद्धजाहि जाइ पिंड कुशल दोष फिटु फिटु स्वाहा ॥

मंत्रभूतडायिनियांगलसर्वकेझारेकामंत्र ।

जैसे कैलोसाकार्य सरूपे करिकरिवो न करो वली तते राम लक्ष्मण सीतेया कार कोटि २ आज्ञा।

इस मंत्रसे भूत डाइनियां गल नाल नाईको झाडा देनेसे बाधा दूर होती है ॥

देवीमंत्र ।

ॐ रुनुं इझनुं इमृत मारातं देवी ओरंपर तारा वीरमान्यो वीर तोन्यो हांक डांक महिमथन करण-जोग भोग जोग धर छतीश नक्षत्र धर सर्प पति वासुकी धर सप्तब्रह्मांडे पति ब्रह्मोके छायाधौ देवीधौ देवताधौ डाइनिधौ गुरुराणांधौ भूतधौ प्रेतधौ धरधर मांचंडी बीजकरुवालषंडी धौर्यवागुटेनां य दाददली इमानको चलंते केके जाते आर रवीर भैरवी काम रूप कामचंडी धर धर वाकी महा कारव्य करे मडरू मारौ कुकी धर वारण धरौवलीते ते कामरू कामचंडीइटमाया प्रसराणि कोटि कोटि आज्ञा देवी रामचंडी बीजे चलिषंडी चौदिगे ऐरलदेवी वासिलाकिमांडि चांडिचंद्र चमोकिले सूर्यटारिल ऐर-लदेवी हराहरांपारि सुखिला कीटरे जीवो परांद्रिवा-हंते खप्पर दाहिने हाथे छुरि ऐरलादेवी अवरतारि डाइनि बांधो चुरइलि बांधु गुनीबांधु मोरा बांधु

ससानी बांधु गुनिया नासुनी आवे गराणि आंवुलावे हांडे माला डांडे जीवताडांडे हसे खेलै भारिवन झारो वलिते ते ते कामरू कामचांडि कोटिशि आज्ञा॥

वाघ बरावेका मंत्र ।

बैठी बठा कहां चल्यौ पूर्वदेश चल्यौ आंखि बांध्यौ तीनों कान बांधौ तीनों मुँह बांधौ मुँहकेत जिह्वा बांधौ अधौ डांड बांधौ चारिउ गोड बांधौ तेरी पोछि बांधौ न बांधौ तौ मेरी आन गुरुकी आन वज्र डांड बांधौ दोहाई महादेव पार्वतीके।

यह तीन वार पढके चार कंकर चारों तरफ डारके बीचमें बैठे ॥

अन्यच्च ।

ॐ सत्यमाता शंकरपिता शंकर किलइ चारिउ दिशा जहां २ सैं शंकर जाइ तहां २ मेरो किंकर जाइ जहां जहां मेरी दीठि तहां तहां मेरी मूठि जहां जहां मेरी नादको शब्द सुनि आवे हो नरसिंहवीर माताबाघेश्वरीको दूध हराम कर कहौ कवन २ किलोवानषुर्वा न पुंगली और शार्दूल केशरि तेंदुवा सोनहार अधिआगाधिआ अटिआर दूदि आर हरिआर काठि पाठि पराधिता चलि घेरिये ते नह्नि आरे अवनि किलौ नारसिंहवार किलै कहु कवन २

किलौगाइका जाया भद्र सिक जाया भेडीका जाया घोड़ीका जाया छेरीका जाया दुइयावचौ पावक घाउ लागइ शिव महादेवको जटाके घाव लागे पार्वतीके वीर चूके हाके हनुमन्त बरावे भीमसेनि मन्त्रै बाँधे जो वाये सीम ॥

अन्यच्च ।

आरापुरवारा परवतपरवारी जहाँ बोइक पसारी जाकोतेगौरानी रानी ताकी बनाई जारीतिसे बांधौ बाघ बोलाई एही वन छाँडि दूसरे वन देखि फेरीक्षा होइ तौ महादेव गौरापार्वतीके दोहाइ हनुमंतजतीकी नोना चमारिकी आज्ञाका बातें कुवाचा चूकै तो ठाढे सूखै गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

अन्यच्च ।

डांडल कालकमुहविकरालविरराक्षदेकरे अहार नामदेव मेलजटाजाऊ बाघ जो जन सब आठ ॥

अन्यच्च ।

महादेवका कुक्कर लुटै लुटै कान मोरे निकट आवहु सुनि आवै लोहनपह पाउ रक्षा करे श्रीगोरखराउ ॥

इस मंत्रको दश वार पढ सर्वांगको रेणुसे स्पर्श करे ॥

सूचीबंधनमंत्र ।

धार धार धार बाँधौ सात वार न लागै न फूटै न आवै घाव रक्षा करै श्रीगोरखराव मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति हनुमंतवीर रक्षा करै फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

सुई हाथमें लेके सात वार मंत्र पढे फिर जहां बांधे वहां छेदे ॥

पहुँचा छेदनेका मंत्र ।

काले तील कवेला तील गुजरी बैठी बीर पसारै सुई न बेधे माथाइ पीर न आवै काली करुइमती मारी दुष्य तिमुकीलार अक्षनी बांधौ सूई अपषां-डेकी धार आवे न लोहू न फुटे घाउ रक्षा करै श्री-गोरखराउ ॥

उरद पढके बकरेको मारो घाव न लगे ॥

गागर छेदनेका मंत्र ।

नीरा धार बांधौ लक्षवार न बहै घाउ न फूटै धार रक्षा करे श्रीगोरखराउ ॥

धनुर्बंधनमंत्र ।

ॐ सारसार माहासारसो बांधौ तीनि धार न धरै चोट न परै घाव रक्षा करे श्रीगोरखराउ ॥

सर्वधारबंधनमंत्र ।

जहिआ लोह तोर शिर जाका घाव मासकर जानि हिया आनंत सोचर करहु मैं बांधौं धार धार मूठि धानि दुनौ तारि ठढीही मीहिन अडाफा- टिहि चण्डी दीन्हिवर मोहिं धारजेठठै तोरिइ ईश्वर महादेवकी दुहाई मोरे पथ न आउ धारधार बांधौ लेहु उठै धार फुटै मुनै फुटै मोरि सिद्धि गुरुके पांव शरण ॥

धार बांधनेका दूसरा मंत्र ।

माता पिता गुरु बांधौ धार बांधौ अस्त्री वश्ये कटै मुनै बांधा हनुमन्तनसुर नवलाख शूद्रनपाके पांउ रक्षा कर श्रीगोरखराउ एता देइन वाचानर- सिंहके दुहाइ हमारी सवति आ ॥

अग्निस्तम्भनमंत्र ।

अपार बांधौ विज्ञान बांधौं घोराघाट आठकोटि वैसंदर बांधौ हस्त हमारे भाइ आनाहि देखे झझके मोहिं देखे बुझाइ हनुमन्त बांधौ पानी होइ जाइ अग्नि भवतेके भवे जस मदमती हाथी हो वैसंदर बांधौ नारायण भाषा मोरि भक्ति गुरुका शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

बीग बरावेका मंत्र ।

बिगुलीतियुताक पठे कात एहा एहें नाथके मान मारे पहरें बांढे भीम मरहु बिगजौं चापुह सीम ।

सिश्रित मंत्र ।

गोरख चले बिदेश कहँ साती देहे बांधिसे पांचो चोरबिग यथा गोरखनाथकी दुहाई जौं काहु सतावे।

राजवशीकरण।

ॐ क्ष्रां क्ष्रूं क्ष्रः ।१२। सौं ह ह सः ठः ठः ठः ठः स्वाहा

इस मंत्रसे भोजनको अभिमंत्रित करके भोजन करे तो राजा वशीभूत होता है अथवा जिस मनुष्यका नाम लेकर भोजन करे वह निश्चय वश होता है। उक्त मन्त्रसे अभिमन्त्रित पुष्पोंकी माला शिर पर धारण करे तौ स्त्रियें वश होती हैं। उक्त मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर जायफलका भक्षण करे तो कामोद्दीपन होता है ।

अन्यच्च ।

ॐ नमो भगवते ईशानाय सोमभद्राय वशमानय स्वाहा ।

देवदालीरसं ग्राह्यं शुष्कचूर्णं तु कारयेत् ।
कन्यया च युवत्या वा गुटिका कारयेद्बुधः ।
राजानो वश्यतां यान्ति स्त्रियः पुंसश्च सर्वशः ।

चौरभयं न तस्यापि न च शत्रुभयं क्वचित् ।
व्याधयः प्रशमं यान्ति शुभं च परिजायते ॥ २ ॥

देवदालीका रस लेकर उसको शुष्ककर चूर्ण करे फिर कन्या या युवतीसे उसकी वटिका करावे इससे राजा, स्त्री तथा पुरुष सब वश्य होते हैं। चौर भय शत्रुभय तथा सब व्याधियां नष्ट होती हैं और शुभकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥ २ ॥

पुष्यार्के श्वेतगुंजाया मूलं पञ्चमलान्वितम् ।
ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्ववश्यो भवेद्ध्रुवम् ॥ ३ ॥
तस्या मूलं समुद्धृत्य स्वीयशुक्रेण भावयेत् ।
यस्मै प्रदीयते भोक्तुं स वश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ४ ॥

पुष्यार्कमें श्वेत गुंजा (चोंटली) का मूल लाकर उसको पच मलोंसे युक्त कर तांबूलके साथ जिसको दिया जायगा वह निश्चयसे वश होगा अथवा अपने वीर्यसे भावित कर जिसको खानेके लिये दिया जायगा वह निश्चयसे वश्य होगा ॥ ३ ॥ ४ ॥

द्वितीय मन्त्र ।

ॐ चिटि चिटि चामुण्डा काली काली महा-
काली अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।
सप्ताभिर्वशयेत्सर्वं दिवसैर्विधिनामुना ।
विलिख्य तालपत्रे तं साध्यनाम्ना विदर्भितम् ॥

निक्षिप्य क्षीरे पुष्पाणि तत्सर्वं वश्येद्ध्रुवम् ।
तालपत्रे लिखित्वैवं भद्रकाली गृहे खनेत् ।
वश्याय सर्वजन्तूनां प्रयोगोऽयमुदाहृतः ॥

इस मंत्रको ताडपत्रपर लिखके साध्यका नाम भी लिखे फिर कनेरका दूध और जल बराबर लेके उसमें ताडपत्रको डाल दे और रात्रीके समय उस पत्रको अग्निमें चढा देवे और आप बैठकर १००० वार उक्त मंत्रका जप करे इस प्रकार ७ दिनपर्यंत करे तो जिसके ऊपर प्रयोग किया जाय वह वश होगा ॥

मिश्रित मंत्र ।

बाघ बिजुली सर्प चोर चारिउ बांधौ एक ठार धरती माता आकाश पिता रक्ष २ श्रीपरमेश्वरी कालिकाकी वाचा दुहाई महादेवकी तालत्रय शब्दा-बाधि रक्षा प्रसंगात् ॥

पाषाण बरावेका मंत्र ।

समुद्र समुद्रमें दीप दीपमें कूप कूपमें कुइ जहांते चले हरिहर परे चारों तरफ बरावत चला हनुमत बरावत चला भीम ईश्वर गौरी चला भोला ईश्वर भांजि मठमें जाइ गौरा बैठी द्वारे न्हाइ ठपकै नउद परे न बोला राजा इन्द्रकी दुहाइ मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

तालत्रयेण सर्प बरावेका मंत्र ।

सर्पायसर्प भद्रं ते दूर गच्छ महाविष । जन्मेजयस्य यज्ञांते आस्तिक्यवचनं स्मर ॥ आस्तिक्यवचनं स्मृत्वा यः सर्पो न निवर्त्तते । सप्तधा भिद्यते मूर्धि वृक्षात्पक्वफलं यथा ॥ रात्रौ पठित्वा तालत्रयं दत्त्वा शयनसमये तदा सर्पभय न कुर्यात् ।

रात्रिमें शयनके समय इन श्लोकोंको पढके तीन तालियां बजाके सो जावे तौ सर्पसे भय नहीं होवेगा।

सूकर मूस बरावेका मंत्र ।

हनिवंत धावति उंदरहि ल्याये बांधि अब खेत खाय सूअर औ घरमां रहे मूस खेत घर छांडि बाहर भूमि जाइ दोहाइ हनूमानक जो अब खेतमहँ सुवर घरमहँ मूस जाइ ॥

नहायके इस मंत्रको ५ बार पढके पांच गांठकी हलदी और अक्षत जहां सूअर औ मूसा आवे वहां बराय दे ॥

अन्यच्च ।

चितफाविंमनचूहा गांधी एपारी रावन घर बांधी ।

अन्यच्च ।

हरदीकर गांठी अक्षत पढिके बराइव दुष्टक खेत

१ इस सिद्धमंत्रकी महिमाको सर्व साधारण जानते हैं ।

धरमहँ । पीतपीतांबर सूशागांधी । ले जाइहु हनुवंत तु बांधी ॥ ए हनुवंत लंकाके राउ॥ एहि कोणे पैसेहु एहि कोणे जाउ ॥

केवल मूसबरावेका मंत्र ।

मूशा चूहा कुंभ कराई । जबही पठवी तबही जाई॥मूशके ऊपर मूशक फेटातू जाइ काटहु आन केखेत॥गौरापार्वतीकी दुहाई महादेवकी आज्ञा ॥

शस्त्रास्त्र बराबेका मंत्र ।

बांधौ तूपक अवनि वार न धरैं चोट न.परे घाउ रक्षा करे श्रीगोरखराउ ॥

सप्तवार पढै सर्वांग स्पर्शेद्रेणुना ॥

अग्निस्तम्भनमंत्रः ।

अज्ञानबांधो विज्ञानबांधो बांधो घोराघाट आठ कोटि बैसंदर बांधो अस्त हमारा भाइ । आनहि देखें झझके मोहि देखि बुझाइ हनुवंत बांधो पानी होइ जाइ अग्निभवेत क भवे जसमती हाथी होइ वैसंदर बांधो नारायण साखि मोरी गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

अन्यच्च ।

अग्नि बांधौ बाहन बांधौ कुल्पाहा बांधौर बीच-की वायु चारिहु खुटै वैसंदर बांधौ आतस मेरा भाव

अम्बर देखे उमगे हमाहिं देखे शीतल होइजाइ अग्नि बालिमणडे लकड़ी बांधो बाहिनि बांधो शाल हाथ जरे न जिह्वा जरे हनिवंत वीरकी आज्ञा फुरे देखि वायुवीर हनुमंत तेरी शक्ति गुरकी शक्ति फुरो मंत्रईश्वरोवाच।

कराही थांभेका मंत्र ।

महिथांभो महिअरथांभोथांभोमाटी सार थांभनो आपनो वैसंदर तेलहि करोतुषार ॥

दिव्यके कराही पढि ७ बेर तौ जीते ॥

अन्यच्च ।

वन बांधौ बनपें दिनि बांधौ बांधौ कंठाधार तहाँ थांभौ तेलतेलाईऔथांभौ वैसंदरछारबनमेंकुशीतल तातेलावेजयपार ब्रह्मा विष्णु महेश तीनि उचलके-दार देवी देवी कासाज्ञाकी दुहाई पानी पंथ होई जाइ॥

प्रसंगादग्निमुक्तारनमंत्र ।

अग्नि मयतेकभवे जहामदमतीपर पिण्ड दुःख पावै दोहाई नरसिंह जग दुःख पावै ॥

तेलस्तंभनमंत्र ।

तेल थांभो तेलाई थांभो अग्नि वैसंदर थांभौ पांच पुत्र कुंतीके पांचो चले केदार अग्नि चलंते हमचले अगिया परा तुषार ॥

टोना झारेका मंत्र ।

लोना सलोना योगिनि बांधे टोना आवहु सखि सिलि जादू कवनु कवनु देश कवनु फिरि आदि अफूल फुलवाई ज्यों ज्यों आवे बास त्यों त्यों फलानी आवै हमरे पास कवरू देवीकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मोहनी ईश्वरोवाच ॥

अन्यच्च ।

सोम शनिश्चर भौम अगारी । कहा चलाले देई अंधारी । चारिजटा वज्रकेवार । दीनहि बांधो सोम-दुवार। उत्तर बांधो कोइला दानव दक्षिण बांधो क्षेत्र पाल चारि विद्या बांधिके देउ विशेष मवर मवर दि-खिल मवरगए चलु उत्तरापथ योगिनी चलु पाता-लसे बासुकी चलु रामचन्द्रके पायक अंजनीके चीर-लागे ईश्वर महादेव गौरा पार्वतीकी दुहाई जो टोना रहे एदी पिंड मन्त्र पढि फूंकै टोना कइल न रहे ॥

टोना झारेके प्रत्यक्ष करनेका मंत्र ।

लोहेके कोठिला वज्रके किवार । तेहिपर नावो बारम्बार । तेते नाहिं पहनाहिं कहुएबार एका पंठा अनंडा बांधौ डीठि मूठि बांधौ तीरा बांधौ स्वर्गे इन्द्र बांधौ पाताले बासुकी नाग बांधौ सैय-

दके पाँव शरण षोदकी भक्ति नारसिंह वादिकार खेलु २ शंकिनी डंकिनी सात खेतरके संकरी बारह मनके पहार तेहि ऊपर बैठु अब देवी चौतराकथ आन जंभाइ जंभाइ गोरखकी दुहाई नोनाचमा-रीकी दुहाई तैंतीस कोटि देवताओंकी दुहाई हनु-मानकी दुहाई काशी कोतवाल भैराकी दुहाई अपने गुरुहि कटारी मारु देवता खल सम आप लेइ काशी कादि कादिकाशीकर पाप तेहि देवताके कंध चढाइ काट जो मनसहँ क्षोभराखे ॥

मन्त्र स्त्रीझारेके टोना चुरैलके ।

एकांत परदा कराइके नोन पानीसे झारिये तौ टोनादिक न रहै उतारि जाइ तुरंत ॥

ओं पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण चारिका सर्ग पाताल आंगनद्वार घर मंझार खाट बिछौना गडई सोवनार सागलन औ जेवनार बिरा सोंधावै फुलेल लवंग सोपारीजे मुह तेल अवटन उवटन औ अवनहान पहिरणलहंगा सारी जानडोराचोलिया चादरि झीन-मोट रूइ ओढन झीन शंकर गौरा छेत्रपाला पहिले झारो बारम्बार काजर तिलक लिलार आंखि नाक कान कपार मुह चोटी कण्ठ अवकंष कांध बाँह हाथ गोड अंगुरी नख धुकधुकी अस्थल नाभी

पेटी नीचे जोनि चरणे कत भेटी पीठि कारि दाब जांघ पेडुरी घूठी पावतर ऊपर अंगुरा चाम रक्त मांस डांड गुदी धातु जो नहींछाडु अंतरी कोठरी करेज पित्तही पित्तजिय प्राण सब बित बात अंकसने जागु बडे नरसिंह कि आनु कबहुन लागु फांस पित्तर रांग कांच लोहरूप सोन साच पाट पटवझान रोग जोग कारण दीशन डीठि मूठि टोना थापक नवनाथ चौरासी सिद्धके सराप डाइनि योगिनी चुरइलि भूतव्याधि पारि अर जेजुलमनै गोरख बैन साच प्रगटरे बिलाउकाली औ भैरवकी हांक फुरो ईश्वरोवाच ॥

मंत्र ज्वरझारनेका ।

ओंनमो अजैपालकी दुहाई जो ज्वर रहै तो महादेवकी दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

इस मंत्रको सात ७ बार पढके झारे तो ज्वर नरहे॥

अन्यच्च ।

समुद्रस्योत्तरे कूले कुमुदो नाम वानरः ।
तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दिशो दश ॥

इस मंत्रको पढ २के कुशासे झारे तो ज्वर न रहै ॥

मंत्र तृज्वरझारनेका ।

कारीकुकरी सात पिल्ला व्याई सातौ दूधपिआई

छिआई बाघ थन इलोकांश्रलाथेके मंत्रेतीनों जाइ मंत्र पढ़ि पढ़ि दाहिने हाथसे आंचर मजित फूंके सोलीसे रोग छुवाइ ॥

स्त्रीवश्य-प्रयोग ।

ओं भगवति भग भाग दायिनी अमुकीं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मन्त्रसे गुरुवारके दिन लवणको अभिमन्त्रित करके जिस स्त्रीको खानपानमें दे वह अवश्य वशमें होगी ॥

द्वितीय मंत्र ।

ॐ ह्रीं महामातंगीश्वरी चांडालिनि अमुकीं पच पच दह दह मथ मथ स्वाहा ॥

रविवारके दिन जिसका नाम लेकर दूध और शर्करासे होम कर वह वशमें होगी उपरोक्त दोनों मन्त्रोंका पुरश्चरण करते समय १०००० जप करनेसे सिद्धि होती है ॥

अन्य मंत्र ।

ॐ कामिनी रंजिनी स्वाहा ॥

अमुं मंत्रं अलक्तकेन स्त्रियाः करतले लिखेत् सा वश्या भवति ॥

अन्य प्रयोग ।

ॐ कुम्भनी स्वाहा ॥

इस मन्त्रसे १०८ वार पुष्पको अभिमन्त्रित करके स्त्रीको सुँघानेसे वशमें होगी ॥

द्वितीय मंत्र ।

ॐ नमो नमः पिशाची रूप त्रिशूलं खड्गं हस्ते सिंहारूढे अमुकीं मे वशमानय २ कुरु २ स्वाहा॥

इस मंत्रको भोजपत्रके ऊपर लिखकर जिसका नाम लेके धूप दे वह वशमें होगा। परन्तु इस मंत्रको ७ अथवा २१ दिन सिद्ध करना चाहिये ॥

अन्यच्च ।

ॐ ह्रीं सः ॥

इति मन्त्रेण मदनमदनांकुशध्वजं मेलयित्वा साध्यां वासाध्यां अयुतं १०००० जपे यथाभिलषितदिनेषु वश्यो भवति ॥

अन्य प्रयोग ।

ह्रां अघोरे ह्रीं अघोरे हूं घोरघोरतरे सर्व सर्वे नमस्ते रूपे हः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे विच्चे नवाक्षरचंडीमंत्रेण निमन्त्रयेत्तच्च बलिपूर्वकम् ॥

अन्य मंत्रप्रयोग ।

ऐं भग भुगे भगनि भगोदरि भगमाले योनि

भगनिपतिनि सर्वभगसंकरीभगरूपे नित्यक्लें भग-स्वरूपे सर्वभगानि मे वशमानय वरदेरेते सुरेते भग-क्लिन्ने क्ला न द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघेभगविधे क्षुभ क्षोभय सर्व सत्वाभगेश्वरि ऐं क्लु ज व्लू भै व्लू मा-व्लू हे हे क्लिन्ने सर्वाणि भगानि तस्मै स्वाहा ॥

जिस स्त्रीको वशमें करना होइ उसे देखता जाय और उक्त मन्त्रको जपै तौ शीघ्र वशमें होगी ॥

दूसरा मंत्र ।

ॐ नमो उच्छिष्ट चाण्डालिनि पच २ मंज २ मोहे २ मम अमुकीं वश्यं कुरु २ स्वाहा ॥

भोजन करनेके अनन्तर पके हुए चावलोंको एक हाथमें लेकर इस मंत्रको पढे फिर उस भात-को रखछोडे । इसी प्रकार १० दिन पर्यंत करे फिर दसों दिनके भातको लेके ७ वार मंत्र पढकर स्त्रीको खानेके लिये दे अथवा उसके घरमें फेंकदे तौ वह वशमें होगी ॥

परन्तु—नीचे लिखे यंत्रको अष्टगन्धसे भोजप-त्रके ऊपर लिखकर पूजा करे प्रतिष्ठा करै और आसनके नीचे दाबकर फिर मन्त्र जपै ॥
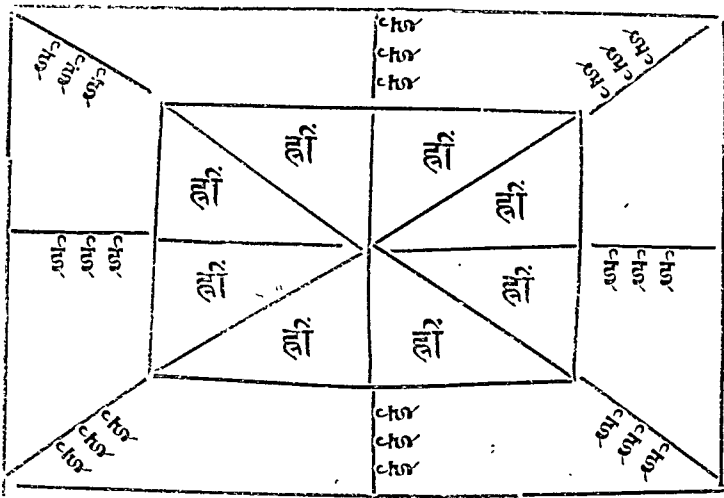
ॐ कामिनी रंजनि स्वाहा ॥

अस्य मन्त्रस्यायुतं १०००० पुरश्चरणं कृत्वा कामिनी हस्ते लिखेत् । सकृत् रविगुरुभौमवारे एव वारत्रयं विलिखेत् तदा स्त्री वश्या भविष्यति ॥

अथान्य प्रयोग ।

ॐ नमः क्षिप्रकामिनि अमुकीं मे वशमानय स्वाहा ॥

प्रातःकालही दन्तधावन करके जलभरी लुटिया हाथमें लेकर ७ वार मंत्र पढके उस जलको पीवै इस प्रकार सात दिन पर्यंत करनेसे स्त्री वशमें होती है॥

कामाक्रान्तेन चित्तेन मासार्धं जपते निशि ॥
अवश्यं कुरुते वश्यं प्रसन्नो विश्वचेटकः ॥ १ ॥

ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाच अमुकीं कामं ग्राहय २ स्वप्ने मम रूपेण नखैर्विदारय २ द्रावय २ रद महेन बन्धय २ श्रीं फट् ॥

द्वितीय मन्त्र ।

ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाच अमुकीं कामग्राहय पद्मे मम रूपेण नखैर्विदारय२द्रावय २ बन्धय २ श्रीं फट् ॥

उपरोक्त दोनों मंत्रोंकी वोही विधि है जैसी इनसे पहले मन्त्रकी विधान करी गई है ॥

अन्यमन्त्रप्रयोग ।

ॐ ठः ठः ठः ठः अमुकीं म वशमानय स्वाहा ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा । श्रीबटुकाय नमः ॥

इस मन्त्रको १०००० जपै रविवारके दिन जप करनेसे सिद्ध होता है ॥

इसके प्रयोग करनेकी यह विधि है कि रविवारके दिन जौका आटा सवा पाव महीन पीसकर १ रोटी बनाके बेलै उसे मन्द २ आंचपर सेकै । एकही तरफ सेकै दूसरी तरफ न सेकै एकही तरफसे ऐसी सेकै कि दोनों तरफ सिक जावे । फिर

१ यदि दोनों मन्त्रोंको कामयुक्त चित्तसे १९ दिन पर्यंत जपे तो भगवान् महादेवकी कृपासे स्त्री अवश्य वशीभूत होगी ॥

जिधर सेकी नहीं है उधर मन्त्र लिखै। सिंदूरको पानीसें घोलकर तर्जनी अँगुलीसे मन्त्र लिखना चाहिये। फिर उसकी पंचोपचार पूजा करे। मिष्टान्न दही और चीनी उस रोटीके ऊपर रखना यह सब वस्तु इस प्रकार रखनी जिससें रोटी ढक जावै ॥

इस प्रकार करके जिसे वशमें करना हो उसका नाम ले २ कर उस मन्त्रका १०८ बार जप करै । इसके बाद मन्त्र पढ २ के उस रोटीके टुकडे कर २ के काले कुत्तेको[1] खवावै[2]। इस प्रकार करनेसे अवश्य वशमें होगी. पूजनकी सामग्री यह है–गन्ध, पुष्प, सुपारी, पान, दीपक, गोरे बटुकनाथ और दक्षिणा इस मन्त्रका पुरश्चरण करते समय ब्रह्मचर्यसे रहना चाहिये ॥

आंखि झारनेका मंत्र ।

पानीके छींटे पढिके मारें सातवेर कुलीमंडा जाई॥
सर्पातिचसुकन्यांच च्यवनं शक्रमन्वितौ ॥
एतेषां स्मरणान्नृणां नेत्ररोगो प्रणश्यति ॥

उठी आंखि झारनेका मन्त्र ।

ॐ वने बिआई बानरी जहां २ हनिवन्त आंखि

१ यदि स्त्रीको वशमें करना होय तौ काली कुतियाको रोटी खवानी चाहिये।
२ यदि एक न खाय तौ दूसरे कुत्ते अथवा कुतियाको खवानी चाहिये ।

पीडा कषावरी गिहिया थनैलाइ चारिउजाइ भस्मत गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र इश्वरावाच ॥

आंखपर हाथ फेरे सात सात वार पढके फूंके तौ व्यथा और पीडा न रहै॥

रतौंधी झारनेका मन्त्र ।

मंत्र पढि २ के फूके भाट भाटिनि सरिचली कहां जाइब जावेउ समुद्र पार भाटिनि कहा मैं बिआवेंऊ कुशकी छाली बिआवेंउ उपसमा छीकर मुडा अंडाघोसों हिलतारा सोहिल तारा राजा अजै-पाल ऊतर तर है राजा अजैपाल करकंदार पानी भरत रहै उन्ह देखै पावावालाउ गोडिया मला उजाल तैके मैं अघोरवी ईश्वर महादेव कै दोहाई येही घरी उतारि जाइ ॥

रस्सा झारनेका मन्त्र ।

पानी ७ बेर पढके पियेके देई कारनी कर सो तुरंत छूटै । ॐअगस्त्यः खनमानःखनित्रैःमयामयत्यंव लमीक्ष्यमाणः उभौवणावृष्टिरुग्रपुयोषसत्तादेवेष्वा-शिषो जगाम ॥ आतापि भाक्षितो येन वातापि च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन समेऽगस्त्यः प्रसी-दतु ॥ अगस्त्यं कुंभकर्णं च शनिं च वडवानलम् । आहारपरिपाकार्थं संस्मरेच्च वृकोदरम् ॥

दांतव्यथा झारनेका मन्त्र ।

पढिके फूके दरदपै बेर ७ व्यथा छूटै तुरंत । अग्नि बांधौ अग्निश्वर बांधौ सो खाल विकराल बांधौ सो लोहा लोहार बांधौ वज्रक निहाय वज्रघन दांत पिराय तो पिराय महादेवके आन ॥

नारा उखरा हो तो हाथ तर्जनी आंगुरिसे झारे ॥

सम्पूर्ण शिरोव्यथाके मन्त्र ।

मालाकण्डाके बेर २१ तब फूके शिरोव्यथा छूटै । निसु नहिरै रोइबदवर मेघ गरजाहि निसुनाहि कहलु घर कुक्कु निवेरी फ्रान डमरू न बजै निसु-नाहि कहल विघ्न पटु साचमई ॥

मन्त्र हूक झारनेका ।

ॐ सुमेरुपर्वत पर नोनाचमारी सोनेकी रांपी सोनेका सुतारी हूक चूक वाह बिलारी धरणी नालि काटि कूटि समुद्र खारी बहावौ नोनाचमारीकी दुहाइ फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

बार इक्कीस पढे शरीरहूक न रहै ।

कर्णमूल मंत्र ।

पढिके राखसे झारी कर्णमूल न रहै । वनाह गाठि बनरी तौ डाटे हनुमान् कंठा बिलारी बाघी थनैली कर्णमूल समजाइरामचंद्रकीबचनपानीपथहोइजाइ

घीनहीका मंत्र ।

एहर चालो सेहर चालो लंका छोडि बिभीषण चालो । बेगि चल बेगि चल मंत्रसहि ।

थनैली झारनेका मंत्र ।

ऊंप बिलारी बघ थनैला पांचवान मोहिं भैरों देल ऊंप बिलारी बघ थनैला डावा पलटि जाहु घर अपने राजा मनेरीकी दुहाई जौडावार है गुरुकी दोहाई ॥

ममरषा झारनेका मंत्र ।

पढि २ के फूंक । राजा अजैपाल सागर खतवारा घट बांधा घाट उतई ममरषीं पानि पिउ सातराति मोहि पीपरपात गुंगी बौरी डोमिनी चंडालिनी तू है नीकी ममरषी तिल एक रथ ठाठि कण्ठ झारि ममरषी क्रोध करु ॥

अंडवृद्धिका मंत्र ।

पढि पढि मले फूंके अण्डवृद्धि छूटै। ॐ नमो आदेश गुरुको जैसेकै लेहु रामचन्द्र कबूत ओसइ करहु राध बिनि कबूत पवनपूत हनुमंत धाउ हर हर रावन कूट मिरावन श्रवइ अण्ड खेताहि श्रवइ अण्ड अण्ड विहण्ड खेताहि श्रवइ वाजंगभीहि श्रवइ स्त्री पीलहि श्रवइ शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर ॥

यह मंत्र महा अनुभाव है चारि वस्तुपर चलताहै जो स्त्रीको पानी पढ़के पिआवै तो गर्भ श्रवे महीना दुइ तीनका । पुरुषको पिआवै अंडवृद्धि छूटै नीका होय । एक ढेला पढ़िके सांपके विपरीपर धरै तो सांप निकलि जाइ । तीनि ढेला पढ़िके तीनिकोने फेंकिदेइ तौ खेत सूखि जाइ उपजे नहा । दिन तीनि चारिका बोवा होइ तिसपर चलै मंत्र पढ़के बार तीनिउबार ॥

मृगीका मंत्र ।

हाल हल सरगत संडिका पुड़िआ श्रीराम फुकै मृगीवायु सूख ॐ ठः ठः स्वाहा ॥

यह मंत्र लिखके कंठमें बांधे जब मृगी आवे ॥

खेत नीके उपजे और रक्षा रहै

इसके मन्त्र ।

उलटथि नरासिंह पलटथि काया रक्षाकरथि नरासिंहराया ॥

फूकाबागीका मन्त्र ।

बनेबिआई अंजनि जायो सुतहनुवंत नेहरुवा-देहरुवा जारिहोइ भस्मंत गुरुकी शक्ति ॥

मंत्र पढि वेर ७ सीकटी एक वा तीनि वा सात लेइ झारना फूकाबागी नीका होय ॥

अन्यच्च ।

भांमनसेति योगीमया जनेउतोरिनहेरुआकिया न पाकै न फूटे न व्यथाकरे विरूपाक्षकी आज्ञा मीतराहि सरै ॥

७ सात वेर पढि पानीका छीटा मारे नहेरुवा ओपिआइवं पानी मंत्र पढे बार २१ नहेरुवा न रहै॥

पोतरहंडि व हूक और घेटमोर

झारेका मन्त्र ।

मेघडंबर पोतरहड़ी तातीशरीर गरीगै जाती दोहाई अजैपालकै जोन जाय बाँधि॥

मंत्र दादका ।

निकाहोय पानी परोरि पिआवो।ॐगुरुभ्योनमः दंवदंव पूरीदिशा मेरुनाथ दलक्षनामरे विशाहतो राजा बैरीवनआज्ञा राज बासुकीके आन हाथ बेगे चलाव ॥

अन्यच्च ।

हाथ बेगे चलाइ आदिनाथ पवनपूत हनिवन्त कर मोर कतमेरुचाल मंदिरचाल नवग्रहचाल दोष चाल पिनाइचाल डोरीचाल इन्द्राहिचालचालरचाल हतन्तविनासहकाल उठि विषितरुवरचाल हम हनु- मंते मुगरे लिंडापरारौ वर्धछले तरुपारि धानपारिहि-

यव अष्टोत्तरशतव्याधि लावरे विशालाव अहरोवि-
शआहे दाडुवालेको पानी पिआइव ॥

अन्यञ्च ।

विषकै पाञ्चरि विषकै मानि । विषै करिय माहिउ
आनि । एकमजाइ दाडुकरिअअमुकाअंगेकसकंडु
दाडु दिनाइके छेद करि सिद्ध गुरूकी जावहारण ।
मंत्र रिसाके पानी परोरि पियाइ ॥

ॐ ककराके नास्यकोन अन अगानित अमुकाके
हर्ष न होय रक्ता पीता स्वेता जावत जीवती हर्ष
शत तावत प्रकाशं ब्रह्महत्यांप्राप्नोति ब्रह्मणेनमः
रुद्रायनमः अगस्त्याय नमः ॥

कुक्कुर काटे तो झारेका मंत्र ।

कुम्हार चाकपरके माटी डङ्कपर फोरि फोरि
झारे रोवां निकसै नीका होय ॥

कारी कुती विलारी धौना कुत्ता कलोर
फलाना काटा कूकुरवारघयल्याशु ।

अन्यच्च ॥

ॐ कुलकुस्वाहा पानीमंत्रिके देव विरवा सात७ ।

मंत्र शींगी मछरीका ॥

शींगी मौरी सेवताशी मारेमारे दुर्गादाशी जेथा
लषना ता पोखरा गौरा पैठि नहाहि महादेव पटि
फूंकाहि विष निर्विष होइ जाहि ॥

मंत्र कठखेगुचीका ।

सोनेके सिंघोरा रूपे लागाबाल छवमासके सुअ लिये गुचीलागसिन जिषयरूवरूआके कान थरूव- ऊआ मंत्र तुहहि जगावै नोता योगिनि श्रीपार्वती आज्ञ जाहु उपरकैशो होइत ॥

मंत्र बीछी झारेका ।

सुरही कारीगाइ गाइकी चमरी पूछीतेकरे गोबरे बिछी बिआइ बीछी तोरे कइ जाति गोरावर्ण अठा- रहजातिछ कारीछ पीअरीछ भूमाधारीछ रत्न धारी छछ कुंहुं कुंहुं छारि उतरु बिछी हाड हाड पोर पोरते कस मारे नीलकंठ गरमोर महादेवको डुहाइ गौरा पार्वतीको डुहाई अनीत टेहरी झडार बन छाइ उतरहि बीछी हनुमंतकी आज्ञा डुहाई हनुमंतकी ॥

अन्यच्च ।

परवत ऊपर सुरहीगाइ तेकरे गोबरे बीछी बि- आइ छः कारी छःगोरी छः का जोता उतारिकै बिषा बिछिठा बहिआ आठगाठि नव पोर बीछी करे अजोर बलि चलु चलाइ करबाउ ईश्वर महादे- वके डुहाई जहां गुरुके पांव सरके तहादे गुरुके कुश कजुरी तहहि बिजुपुरी निर्माजाइकै डुहाई महा- देव गुरुके ठावहिं ठाव,बीछी पार्वती ॥

अन्यच्च ।

बीछी २ तोरे के जाति छः कारी छः पीयरी छः परवारी बोधा पषाना पसस्वपाउ तोरी विषितइमें नाहि ठाउ ऊपरजा सिगुधै षाउ शिव वचन शिव नारि हनुमान्के आन महादेवके आन गौरापार्वतीके आन नोनाचमारिनिके आन उतरि आउ उतरि आउ ॥

अन्यच्च ।

अब हठ मुठिबैगनभाविउतरुबीछी मति करुवानि॥

अन्यच्च ।

जे सँदेश लेइ आवे तेहि पानी परोरि पिआइ देव काया षापे शिर मानिकरामुप मोडो मारिजासि अन षांधनो पानी पावै बांधि उतरि जासि ॥

बीछूके विष चढानेका मंत्र ।

टूटे खाट पुराने बान चढजा बीछू शिरके तान।

जहां बीछूने काटा हो उस स्थानमें इस मंत्रको फूँकै तो विष बढजायगा ॥

तत्रादौ सांप झारेका मंत्र ।

उत्तर दिशि कारी बादरि तेहि मध्य ठाढ काल पुरुष एक हाथ चक्र एक हाथगदा चक्र मारो शत खंड जाइ गदा मारे साती पाताल जाइ ॐ हर हर निर्विष शिवाज्ञा ॥

अन्यच्च ।

थिरुपवन जेहि विष नाशे तेहि देखि विषधरहू कांपे सत्पर्जा आष विषमो संदीत्पैष्ठ्यै नाहिं विषइ मंत्रो कुशलथालुगाले झावित्काल निर्विश होइ ॥

ज्वरबंधन झारेका मंत्र ।

जटा ऊपर कारागरे ॐ नमः शिवाय शिवकी आज्ञा पुनः कागाचरे भीटे पनिनिआपरे पीठे सवा भार विष निजबडं अपने डीठे ॐ नमः शिव विआज्ञा ॥

लहरि जगानेके मंत्र ।

छवमासकी परीडंकक्याकीकरार गराने नतेरी माछिहि काग आवत कागा चरइ भीटे पानि आपरई पीठे सवाभार विष निजबडं अपने उडीठे ॐ नमः शिव विआज्ञा २ गिद्ध्र उडइ ऊपर ईशर बाहन भय ठांवहिषंव नोना परिहाथ षंडानके परिडंक उठि ठाढि भइ जागु २ ईश्वर डुहुरे डंकहाडं कंडाडिगौ षंजरहू लागिकाइ देहांक देत आवै नोना योगिनि डंक उठै बिहसाईते साते समुद्रे माझे षंडी कबीर ववाठे जीव धरवरो आमंत्रि रहहि जगावै नोना योगिनि पारवती जागु परमइ शतहुहुरे डंक ॥

अन्यच्च ।

वोह परोस रात सुनु २ काल डंक डंक मरै तो मैं मारो सात गद सुरल पांजरराषु एकका काल महेश समंत्र यहां आप कह काटे तौ मनमह चुहुकीके थुकिडारीं आनके काटे तौ हाथसें ॐचुहुकार अर्ध कार कनुविशनार षार छिछी विशनाहि आपु कह काटे मा आनकह काटे तौ पटि डंक पोछि देई ॥

शत्रुपादत्राणमारण मंत्र ।

इस्मनामीन् सलास मातिन्

एक चिल्ल ४० दिनका रोज करै जप १००० करके अमल करै । फूल, लोबान, सन्दल, चमेलीका तेल, कस्तूरी, अरगजा दशांग अवर इन सबको बराबर लेके चूर्ण करले इनकी धूप चमेलीके तेलमें देना ४० दिनतक अमल करना इसके बाद खूब मजबूत मिट्टीका एक पुतला बनाके सुखावे उसे अगाडी धरकर शत्रुका ध्यान करके ऊपर लिखे मंत्रका जप करे माला जीयापोताके १०८ दानेकी जपना । एक जूता उस पुतलेके मारना इस प्रकार १०० माला जपके १०० जूते मारना और धूप देते जाना इस तरह सात दिनतक करनेसे शत्रुके जूते लगेंगे । अगर इस मंत्रको इसी प्रकार ४० दिनतक करै तो शत्रुका कपाल भग्न होजायगा ॥

शत्रुके आवेश करनेका मन्त्र ।

जाग जागरे मसान मेरे सुरति करि २ फलानेका बेटा फलानेके घरजा जान जाय तौ तेरी मा बहिनकी तीन तल्लाक ॥

इस मंत्रको सिद्धयोगमें १०८ बार जपके सिद्ध कर रक्खे कबरमें शूकरका एक दांत गाडदे । इस मंत्रको २१ दिनतक कबरके पास खडा होके जपै इस प्रकार रात्रीको जप करै तो शत्रु घरसे निकले औ मुक्त करना होय तो उस दांतको कबरमेंसे निकाल ले ॥

अनुभूत मन्त्र ।

वार बांधो बार निकले जाकाट धारनी सूजाये लय बहरना चौंहाथसे तौ काट दांतसे डुहाई मामा हवाकी ॥

पहले पोतनी मट्टीसे चौका लगावे । उसके ऊपर सुपेद चादर बिछाके ऊपर बैठके जपे जपते वक्त पश्चिम दिशाको मुख कर लेना चाहिये । एक घृतका दीपक बालके सन्मुख धर लेना । एक पैसेका हलुआ और एक पैसैकी पूरी । अतर मेवा गांजेकी चिलम यह सब पदार्थ रक्खे, दो लौंगके जोडे धरना एक नीबू यह सब दीपकके अगाडी रखके लोबानकी धूप देना । इसके बाद संपूर्ण वस्तुओंको दरयावमें

फेंक देना । इसी प्रकार ४० दिनतक करना । परन्तु नीबू और दीपकको धरा रहने दे । फिर १०१ बार नींबूको अभिमंत्रित करके नींबूको छेदे इस प्रकार ४० दिन करनेसे शत्रुके उदरमें पीडा होगी और छेदन करनेसे मृत्यु होगी ॥

वशीकरणप्रयोग ।

ॐ अस्य श्रीवामदेवमन्त्रस्य संमोहनऋषिः । गायत्री छन्दः । श्रीकामदेवदेवता अमुकवश्यार्थे जपे विनियोगः । अथ न्यासः—कां हृदयाय नमः । कीं शिरसे स्वाहा । कूं शिखायै वौषट् । कामदेवो देवो देवता अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानम् ।

जपारुणं रक्तविभूषणाढ्यं मीनध्वजं चारुकृतांगरागम् । कराम्बुजैरंकुशमिक्षुचापं पुष्पास्त्रपाशौ दधतं नमामि । ॐ कामदेवाय सर्वजनप्रियाय सर्वजनसंमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वजनस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मंत्रको ६००० जपके सिद्ध करना चाहिये कनेरके लाल फूल और चमेलीका इत्र लगाके दशांश होम करे । बटुकके निमित्त कुमारको भोजन करावे ऊपर लिखे मन्त्रसे १०८ बार चन्दनको अभिमंत्रित करके उस कुमारके तिलक

लगावे । और जिसको वश करना हो उसका ध्यान करके बटुकसे संभाषण करे तो अवश्य वश होगा॥

मारण प्रयोग ।

ऐं ह्रूं ऐं श्रीं मम शत्रून् हानय हानय घातय घातय मारय मारय हुं फट् स्वाहा ॥

इस मंत्रके प्रयोग करनेकी यह विधि है कि रात्रीके समय शत्रुका ध्यान करके काष्ठक मीलाके ऊपर १००० जप करै इस प्रकार ४८ दिन तक करनेसे अवश्य शत्रुकी मृत्यु होगी ॥

यन्त्र ।
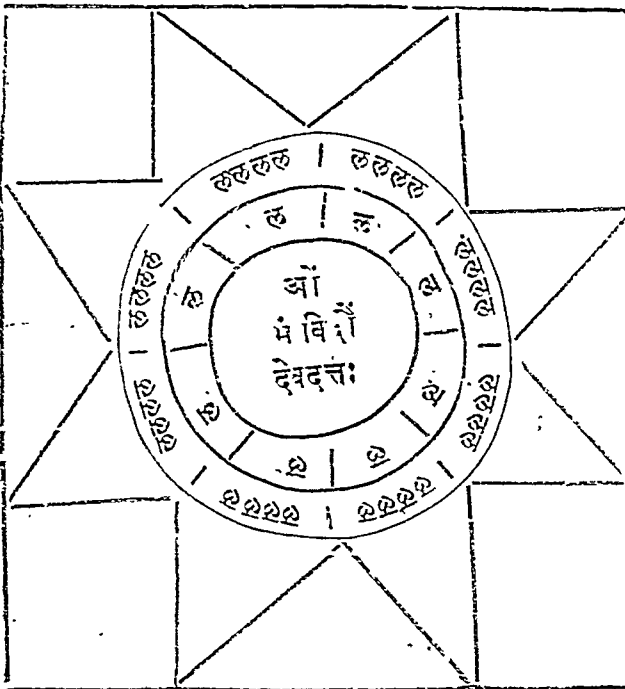
इस यंत्रको भोजपत्रके ऊपर हरिद्रा और हर-तालसे लिखकर जिसका मारण करना हो उसका नाम लिखे और एकान्तमें स्थित करदे तौ शत्रुका नाश होगा ॥

अथवा इस यंत्रकी पूजा करके यंत्रको एका-न्तमें रखकर नीचे लिखे मंत्रको जपै तौ शत्रुका मारण होगा ॥

मन्त्र ।

भुंक्ष्व भुंक्ष्व अमुकं क्षं ।

इस मंत्रको एकान्तमें यत्रंके निकट बैठके जपै और कडुवे तेलसे होम करै तो शत्रुकी मृत्यु होगी॥

मंत्र वैरी षसावेका ।

त्रिपुरा संहारित जो तोहि तुजगे मानि जाउ पूत परारे बसिकरे वेरी रक्त नहाउ अलथांभौ थल थांभौ आपनिकाया खंड पृथिवी थांभौ त्रिपुरामाया थांभौ तिन्हम त्रिपुरसुंदरीकी शरण जौं अमुकाके विष हरय परा वेगि देइ ॥

अथ बंधपलास मंत्र ।

ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख गदा प्रहारिणी अमुकस्य बंदी पलास । २१बार पढते बंदी छूटे ॥

अन्यच्च ।

ॐ गज गते ऽमकुरते दाम डंडंस्त फेफेत्कार फारै विशिष ज्वाला माला करालं हो हो हो होनि हांतं हसि हसि मानिसभा सपाटा रहा सेहं कारणा नौदौस्ति स्वन कुरुते सर्वतु मुखजांति । बार २१ ॥

अन्यच्च ।

ॐ छोटि मोटि वेटुकी कानी कटुकइ इताहसा एक विढुजइ मगीजइ सविंढु जाइ अमुकाका विबंधि पबंधि दोषो कामाक्षा देवी तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र । बार २१ । ॥

अन्यच्च ।

ॐ नमोस्तु ते भगवते पार्श्वचन्द्राधरेन्द्र पद्मावती सहिताथमे ऽभीष्ट सिद्धिं दुष्टग्रह भस्म भक्ष्यं स्वाहा स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा हिलि हिलि मातंगनि स्वाहा स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा । २१ बंदी मोचनं भवति ॥

अन्यच्च ।

बाघ वाहिनि सिंहेया काली काली कालाम्बी आजा देवी मैं तोरी शरणे वने नाही विशस तोहि देवी त्रिभुवनरेसाष चौषष्टि बंधन काटार मांगी अपिला बाघ २ थापा एनी अलं चाषोष्ट बंधन होइल वीरल

कालीकासा छोड़े हंकार चौषष्टि बंधनकाटार भागि भलु छार थार कालिकार आज्ञा एतन्मंत्रद्वयसप्तो-त्तरशतं सद्यं नाना विधं बंध छेदो भवति। २१ इसं मंत्रं पठित्वा करांगुलिमात्रया प्रहारे दत्ते द्वार-मुक्तो भवति।ॐ दं हं ॐ आये आये चिंविठि होलो वसनंदिका कालिका । अनेन मंत्रेण श्वेतसर्षपं श्वेत-ओठहुन पुष्पं पठित्वा प्रथम द्वारे क्षिपेत ततः सर्व-द्वाराणि भंजति ॥

अथ किंचित्सुप्रयोगः ।

चौरा बाधा सरपाउधाइ बन छाडि आवनन जाउ सावज धइ धइ ल्याउ रामचन्द्र मारलकुकुहावनके षाषहि षाइ मोरि जहां तहां कपसरे मोरे झरले कठहि निर्विस होइ जाइ दुहाई रामचन्द्रकै दुहाई गौरा पार्वतीके जो एही बन रह ॥

मन्त्र बनझारेका।

अर्ज्जुनः फाल्गुणो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ।
बीभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनंजयः ॥

इस मंत्रको लिखके पशुके गरे बांधे एतवारके अनुदये तो खांग नीका होइ॥

मन्त्र किरहा झारेका।

चमारे बभनेकैल मिताई। ओकरेपापे परुरसाई सूर्य्य देवता साखी। जो अब रसाइरहे माखी।

अन्यच्च ।

गङ्गापार बबुरके गाछी । झरे कीरा झरे रसाइ ईश्वर महादेव गौरा पार्वतीके दुहाई । अर्द्धोदय वेला सात गोटी पढि मारे न रहे ॥

अथ गो महिष्यादि दुग्धवर्द्धन मंत्र ।

ॐ हुंकारिणी प्रसर शीतल । अनेन मन्त्रेण तृ-णान्यभिमन्त्र्य भोक्तुं दद्यात्पशुभ्यस्तदा बहुलं दुग्धं भवति ॥

अथ स्त्रीणां गर्भधारणविधिः ।

वेदोक्तमंत्रः ।

विष्णुर्योनिंकल्पयतुत्वष्टारूपाणिपिंशतु आसिं प्रजंतु प्रजापतिर्द्धाता गर्भं विदधातु गर्भं धेहिसिनी वाली गर्भं धेहि सरस्वती गर्भंते अश्विनौ देवा अध-त्तांपुष्करस्त्रजौ । बांझ जो एक बार जाइ तौ गर्भ रहै पुत्र होई पै अपने पुरुषसे न लागै बीज जो बाहर आवे सो कुक्षिहीके शिर डारे मंत्र कुंतीका पढे बेर तीन वा सात वा इक्कीस ३ । ७ । २१ ।

अथ मंत्र सावर ।

ॐ नमो आदेश गुरुको ॐ नमो आदेश गुरु-को बांझिन पुत्रिनि एक बांझ मराक्ष जाति चौथी गर्भपातिनी चारि उन्हि एकमत भय चली चली

कामरूगई कामरूदेश कामाक्षा रानीते इशमाइल जोगी बषानी तुह जाहु योगिके पास पूरहि तौ हरि मनके आस इसमाइलके संग उन्ह रतिकइ आंतर भैटनो नावमा इनीसे भइ नोने कहा तहु चारिहु छिनारी कोषित निति कीन्हन देहगारी कोषिनिति कुंती पांच संगषेली एक द्रोपदी पांचके सहेली सूरज देवता साषी होहु मोरे जिवमें मा संताप मोहिं तजिलागे परपुरुषकेपाप एकबुंद निति अक-रम कीन्ह तेहिते है वंशकर चीन्ह शिववाचा ब्रह्म-वाचा लेहुजमाउ ठोला टमाना भूत प्रेत दोष रोग जो लाख होइ तेहि जग चली जाउ हरिजंबीर ॥

अथ गर्भरक्षाके मंत्र ।

पानी पढदेइ बेर ७ । ॐ पतहुभांवथानारी स्थिर गर्भापिजायते । इति मंत्रेण जलं दद्यात् ॥

अथ प्रसूतिका मंत्र ।

पानी पढ देना तुरंत बालक होई । ॐ श्रावणो लंचगर्भा च सुखमेव प्रसूयते । इति मंत्रेण जलं देयं सुखेन बालको जायते ॥

गर्भ रक्षा गंडाबंधन मंत्र ।

गंडा कटि मह बांधब हिमवंत उतरे कूले कोह-शी नाम राक्षसी । तस्या स्मरणमात्रेण गर्भो भवति

मन्त्रः ॥ ॐ थाथो मोथो मेरा कहा कीजिये फलानीका गर्भ जाते राखि लीजिये गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

सर्पशूलके मंत्र ।

पानी पढि पिआइब। कालि कालि महा कालि नमो स्तुते हनहन दहदह शूलं त्रिशूलेन हुँ फट् स्वाहा ॥

अथ बालकरक्षा। बालकझारेका मंत्र ।

कुलदेव बिहस्तपे भगरज श्रीनरसिंह देवं चे डरे फलानाका भेड ताहि षोडनारसिंह षं षं षं षं षं ॥

अन्यच्च ।

आदि नाथ भय हरण कहहु कहवायो येही भय हर होयसे सावर हेत हवा बडिल भूत व्याधि डीठि मूठि सब बांधिके आनो ग्रह मातृकन सुरबायु साजि पढमनै बांध बिहत कै भैरव योनाहि लेइ आउ भैरवानन्दका डीठा कोतवाल बनारसिकेबंम बालुके कीजे हार तोहि लागे बात है ॥

अन्यच्च ।

शुक्र शनिश्चर भौम अधारी कहवा चलेउ डाइनि सारी डांकिनी डंकीनि चटी पुरुष देखाकै बैसी पीपरके डार सातसे योगिनी जागे मशान डीठि मूठि

बाँधिके आ नगरह गाडकन मुखाय संतावै मनै-बाद विनती पर भैरव टोनाहि लैआउ ॥

अन्यच्च ।

षिल्लौराई षिल्लौलीन षिलौसोपनु सजांकालीं पीडीठि अग्निपरोसे जेवे गरुड़ पाथरखाई भस्मत भैजाई पत्थर शिलउ पत्थणि षिलावंरंङ षिलषिलंग परबत हाथ चढा बशकरौं थौक लौहेको चनाचंडी डीठि मूठि भस्मतहोइजाइ अपनी डीठि पर डीठि-पर पीठि पाछे घालु बाटबीर हनिवन्त तेरी शक्ति॥

गंडा बालकरक्षाके विधि करब ।

कुआरकिन्याका काता सूत तेरह ताग कच्चा घोंघा मह ओनइस १९ चाउर बासमतीके रांधिके भात षिआइब सूतक गंडापुरि बांधि गरे ॥

मंत्र घोंघारक्षक ।

घोंघा घोंघा समुद्र घोंघासमुद्रके कितजानि जानहु घोंघा जानि जरु सूत जरैतो पारवती केश आचर जरे तौ महादेवकें जटा जरै ॥

मंत्र गंडापूरेका ।

ॐ आसन योगी कपूत जंबीरीके पास न वोई श्रवरी गैकरीर कतमासुकी सानी बिआरी जेहिमे

बांधौ बांधिके जडाव षषधीकजाइ कावरूके विद्या कामाक्षा जलविधि नाथ गुरु गोरखनाथ रक्षपाल ।

मंत्र पानीफूँकि पिआवेका ।

पानी तीनि पानी ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जानी शिव शक्ति आदि कुमारी अब छार भार सब तोही की ताइ कहहु कतहूं का होउ धैले आउ बालकके तोके मोके पुण्य जब होय महादेवके जटा परे पार्वतीके आंचर जो यह बालक दुःख पावै ॥

बालक झारनेका मंत्र ।

शंकर यशसामी केशरि ललित केशरि पश्चिमि वारुणि भूकटेन कुटौकार दंत विकारौं तेंतिस कोटि भूत भीमदेव संघारी भीम बालकके छरु अह कह बालकके ससुखना चोटो खाजो मोरा कोषें गरुड कंठे समुद्रतीर गिधिनिउ आवथशोष भस्मत होइ जाइ ठौर भक्षिनी स्वाहा सुआक्ष स्त्रीके नाभीके हेट योनिके अपर माक्षी जलते मारि राखि ओहि ठहर तब मंत्र पढिके फूके माक्षी जीये बालक चंगा हो मरै न कबहि ॥ यह प्रयोग गर्भघातिनहुके करै जो अच्छा होय ॥

अथ मक्षिकासजीवनी मंत्र ।

आवण इस मंत्रसे मुई माछी जिये ।

अथ प्रेत चढानेका मंत्र ।

अल्प गुरु अल्प रहमान । उसकी छाती चढ शैतान उसकी छाती न चढै तौ मा बहिनकी सेजपै पग धरै अलीकी दुहाई ॥ ३ ॥

रात्रीमें शुक्रके दिनसे आरंभ करे पहले मट्टीसे गोल चौका लगावे । उसके ऊपर उत्तरकी तरफ तिल और तेलका दीपक धरै और आप दक्षिणको मुख करके बैठे। सुपेद फूल और रेवडी रक्खै लोबानकी धूप देके १७००० हजार जप करै । इस तरह करके वोह शीरीनी क्वारे लडकेको देदेनी चाहिये । तौ स्वप्नमें बर पावगा ॥

१००० जप रात्रीमें करनेसे शत्रुके ऊपर शैतान चढैगा । १०८ नित्य जप करनेसे यह मंत्र सिद्ध रहता है। अगर शैतानको उतारना होय तौ गेहूंकी रोटी बनाके एक तरफ घीसे चुपडै और एक गुडकी भेली उसके ऊपर धरके दरियावमें बहादे तौ शैतान उतर जायगा ॥

---

१ जिसके ऊपर मंत्र चलाना हो उसका ध्यान करै और नाम लेना चाहिये । २ अलीकी दुहाई ३ वार देनी चाहिये ।

मोहिनी यंत्र ।
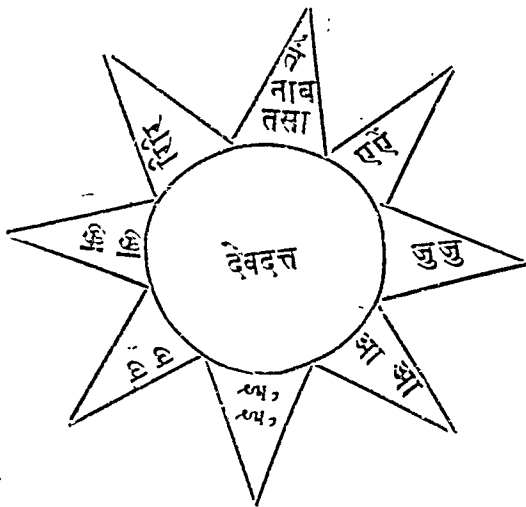
इस यंत्रको भोजपत्रके ऊपर हरतालसे लिखे चाहे जिस कलमसे । उसका पूजन करे । फिर शत्रुके नाम प्रतिष्ठा करै फिर कन्याके काते हुए सूत्रसे लपेटकर भूमिमें गाडदे तिसपर बैठके नित्य कुल्ला दतौनसे करै । तदनन्तर ७ लात मारै जब तक काम सिद्ध न हो तबतक ऐसाही करै ।

शत्रुकी छाती फटनेका यंत्र ।

२०	२७	२	८
७	३	२४	२३
२६	२१	९	१
४	६	२२	२५

इस यंत्रको बकरेके रुधिरसे लिखकर धोबीके पटलेके नीचे गाडदे । ऐसा करनेसे शत्रुकी छाती फटा करैगी ।

शत्रुज्वरयंत्र ।
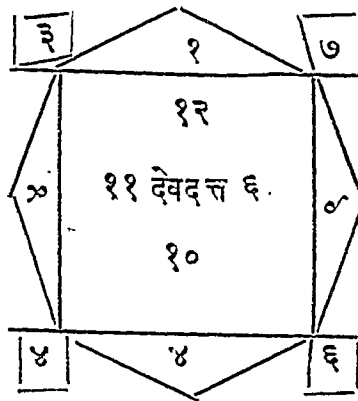
इस यंत्रको कोरे ठीकरेके ऊपर लिखके पुस्तके ऊपर शत्रुका नाम लिखे और अग्निमें डालदे तो शत्रु को ज्वर आवैगा । और जब अग्निमेंसे निकाला जायगा तब ज्वर उतर जायगा ।

अथ ज्वरमंत्र ।

ॐ ह्रां ह्रां क्लीं सुग्रीवाय महाबलपराक्रमाय सूर्यपुत्राय अमिततेजसे एकाहिक द्याहिक त्र्या-हिक चातुर्थिक महाज्वर भूतज्वर प्रेतज्वर महाबारि वानर ज्वराणां बन्ध हां हीं फट् स्वाहा ॥

इस मंत्रसे २१ बार झाडा देनेसे सब प्रकारका ज्वर दूर होता है ॥

गर्भस्तम्भन मंत्र ।

ॐ नमो गंगाउकारे गोरखबहाघोरघीपार गोरख बेटा जाय जय छुत पूत ईश्वरकी माया ॥

इस मंत्रसे अभिमंत्रित करके कारी कन्याके काते हुए सूतका गंडा बनाके पहरादेनेसे गिरता हुआ रुधिर बन्द हो जायगा ॥

भूतनाशन मंत्र ।

ॐ नमो काली कपाली दही २ स्वाहा ॥

इस मंत्रसे १०८ बार तेल लगानेसे भूत पुकार उठैगा ॥

डाकनी नजर दूर करनेका मंत्र ।

ॐ नमो नारसिंह पाडहार मस्मना योगनी बंध डाकनी बंध चौरासी दोष बंध अष्टोत्तरशत व्याधी बंध खेदी २ भेदी २ मारे २ सोखे २ ज्वल २ प्रज्वल २ नारसिंह बीरकी शक्ति फुरो ॥

इस मंत्रको १०८ बार पढ २ के झाडा देनेसे डाकनीकी नजर दूर होती है ॥

अथ उच्चाटन ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मसान । ॐ टं लीं श्रीं ह्रीं ॐ शत्रु ॐ टं लीं टं लीं टं लीं राजा वश्यः । ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ लक्ष्म्यै । ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ॐ पुत्रः हेतोः । ॐ ह्रीं श्रीं टं लीं ॥

इस प्रकार उक्त मन्त्रको भोज पत्रके ऊपर कस्तूरी केसरसे लिखै तौ कार्य सिद्ध होय ॥

सुख प्रसव यंत्र ॥

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

इस यंत्रको थालीमें लिखकर गर्भवती स्त्रीको दिखाता रहे सुखसे सन्तान उत्पन्न होगी ॥

राक्षसनाशनमंत्र ।

ॐ ठं ठां ठिं ठीं ठुं ठूं ठें ठैं ठों ठौं ठं ठः अमुकं हुं ॥

इस मंत्रसे झाडा देनेसे राक्षस उन्माद दूर होगा ।

मसान मंत्र ।

सपेदा मसान गुरु गोरखकी आन यमदण्ड मसान काल भैरोंकी आन सुकिया मसान नुलिया चमारीकी आन फुलिया मसान गोरे भैरोंकी आन हलदिया मसान ककोडा भैरोंकी आन पीलिया मसान दिल्लीकी जोगनीकी आन कसेंदिया मसान कालकाकी आन कीकडिया मसान रामचन्द्रकी आन मिचमिचिया मसान शिवशंकरकी आन सिलसिलिया मसान वीर मोहम्मदापीरकी आन ॥

इतने मसानके नाम हैं। इनसे झाडा दे तौ मसानकी बाधा दूर होगी ॥

मंत्रप्रयोग ।

सतनाम आदेश गुरुको आदेश पवन पानीका नाद अनाहद दुंदुभी बाजै जहां बैठी जोग माया साजै चौसठ जोगनी बावन बीर बालककी हरै सब पीर आठो जात शीतला जानियें बंध २ बारे जात मसान भूत बन्ध प्रेत बन्ध छल बन्ध छिद्र बंध सबको मारकर भसमन्त सतनाम आदेश गुरुको ॥

इस मंत्रको ग्रहणमें १०८ बार जपके सिद्ध कर लेना चाहिये। इस सिद्ध किये हुए मन्त्रसे झाडा देनेसे सब प्रकारकी बाधा दूर होती है ॥

शिरका दर्द झाडनेका मंत्र ।

सुरगायके गर्भमें उपजा बच्छा बच्छेके पेटमें कच्छा कच्छेके पेटमें उपजा कालजा:कालजा कटै मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच महादेवकी आज्ञा फुरो ॥

इस मंत्रसे २१ बार शिरमें झाडा देनेसे शिरकी पीडा दूर होगी ॥

मनोरथसिद्धिमंत्र ।

ॐ हर त्रिपुर हर भवानी बाला राजा प्रजा

मोहनी सर्व शत्रु विध्वंसनी मम चिन्तितं फलं देहि देहि भुवनेश्वरी स्वाहा ॥

इस मन्त्रको पवित्रताके साथ १०८ बार जपनेसे सिद्धि होजाती है॥

शत्रुमोहनीयंत्र ।
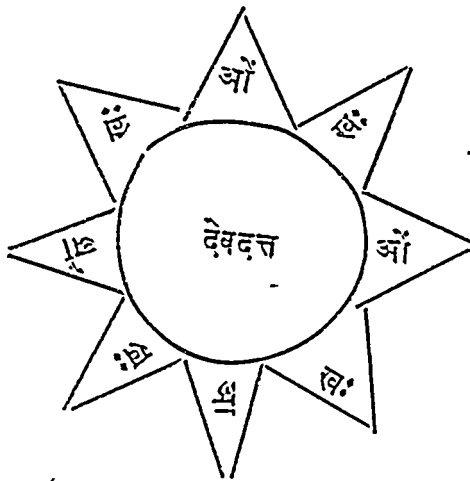
इस यंत्रको रक्तचन्दनसे भोजपत्रपर लिखकर पूजन और प्रतिष्ठा करै पश्चात् सहतमें धरै तो शत्रु संमोहित हो निश्चय वश्य हो ॥

सब प्रकारके रोग दूर होनेका यंत्र ।

३३	३२	२७
३३	६६	३७
३७	४६	६७

इस यंत्रको भोजपत्रके ऊपर लिखके बालकके गलेमें बांध देनेसे सब प्रकारकी बाधा दूर होती है ॥

कामसंत्रः ।

तत्रादौ काममन्त्रोद्धारः ।

मदमदमदमादौ मादयेति द्विवारं
तदनु च खिलनीयं सौख्यदं ह्रीं च तस्मात् ॥
अथ च पदमुपान्ते नामरूपादिसंज्ञा ।
भवति मदनमन्त्रः स्वाहयासंयुतोऽयम् ॥ १ ॥

अथ काममन्त्रः ।

मद मद मद मादय मादय खिल ह्रीं अमुक नाम्नीं अमुकस्वरूपां स्वाहा ॥

अथ ध्यानम् ।

कनकरुचिरमूर्तिः कुंदपुष्पाकृतिर्वै
युवतिहृदयमध्ये निश्चितादत्तदृष्टिः ।
इति मनसि मनोजं ध्याययेद्यो जपस्थो
वशयति च समस्तं भूतलं मन्त्रसिद्धः ॥ १ ॥

सुवर्णकी समान जिसकी सुन्दर मूर्ति है कुन्दके फूलकी नाइ सपेद और स्त्रियोंके हृदयके विषे जिसने दृष्टि लगा रक्खी है इस प्रकार जो कामदेवका ध्यान करता है उसके सब वशमें होते हैं ॥

शतशतपरिजापात् स्यादयं सिद्धिदाता
दशशतकुसुमानां लोहितानां च होमात् ।

इह तु सकलकार्यं वामहस्तेन कार्य-
मुपदिशति समासाज्ज्योतिरीशस्वरूपा ॥

१०००० जप करके दशांश १००० होम करै । होम लाल फूलोंसे करे। इसमें सब काम बांये हाथसे करना चाहिये ॥

चामुण्डामन्त्रोद्धारः ।

चामुण्डे प्रथमे जपे च कथितं जूंभे तथा मोहये
ज्ञातव्यं वशमानयेत्यपि पदं साध्यं च द्वीपाश्रुतम्।
स्वाहान्तः प्रणवादिरेष कथितस्तकैः ०००० हनः
सन्मंत्रः कविसार्थसेवितपदो न स्याद्वितीयो भुवि॥

चामुंडामन्त्रः ।

ॐ चामुण्डे जूंभ मोहये वशमानय स्वाहा ॥

चामुंडाध्यानम् ।

दंष्ट्राकोटिविशंकटा सुवदना सान्द्रान्धकारे स्थिता
खङ्गांगासितमूढदेच्छितकरा वामेशयासंस्थिरः ।
श्यामा पिंगलमूर्धजा भयकरा शार्दूलचर्माम्बरा
चामुंडाशववाहिनी जपविधौ ध्येया सदा साधकैः॥

करोड़ों डाढोंसे विकराल सुन्दर मुखवाली महा अंधेरेमें स्थित ऐसी खाटपर बैठी हाथमें तलवार लिये काली और भूरे बालवाली भय देनेवाली मृतकके ऊपर स्थित ऐसी चामुण्डाका ध्यान करै॥

विधिः ।

जप्त्वा लक्षमसौ पलाशकुसुमैरग्नौ दशांशे हुते सिद्धिं गच्छति वा सकर्मविधिना निःसंशयं मंत्रजा । पुष्पं सप्तनिधानमंत्रणकृतं नूनं ददत्यादरा-त्तद्भागवतीं करोतु वशगामित्याह वागीश्वरः ॥

इस मन्त्रको एकलक्ष १००००० जपै । दशांश अर्थात् १०००० होम करै । होम पलाशके फूलोंसे करना चाहिये । होम करते समय एक २ पुष्पको सात २ बार अभिमंत्रित करके होम करना चाहिये जिसको वश करना होय उसका ध्यान करै अवश्य सिद्धि होगी ॥

कामेश्वरमन्त्रोद्धारः ।

आदौ कामपदं ततो निगदितं संबोधने देवहि प्रोक्तं कर्मपदान्वितं मृगदृशां नाम स्फुटं निर्दिशेत् । तस्मादानयतां ततो मम पदं ज्ञेयं पदं चेत्यतोऽप्यो ङ्कारान्वितहींमितिप्रकटितो मन्त्रो मया मान्मथः ॥

कामेश्वरमंत्रः ।

कामदेवामुकीमानय मम पदं वशं च ।

अथ ध्यानम् ।

आकर्णाञ्चितकार्मुको हरपदे धुन्वन् हरं सायकै-र्मीनोमण्डलमध्यगो दयितया सानन्दमालिंगितः ।

सत्यालीढपदो जपानिभतनुर्मग्नःपरेतासनः
कन्दर्पो जयकर्मणि प्रतिदिनं ध्येयो नरैरीदृशः ॥

कर्णताईं जिसने धनुष खैंच रक्खा है और महादेवके ऊपर अपने बाणोंका प्रहार करनेवाला सूर्यके मण्डलमें विराजमान और रति नामकी जो कामदेवकी स्त्री तिसकरके आलिंगन करा हुआ और जपाके पुष्पकी समान जिसका देह है और मृतकोंके आसनवाला ऐसे कामदेवका जयकाममें ध्यान करना ॥

अथ विधिः ।

जप्त्वा भावयुतं कदंबकुसुमं पुष्पं पलाशस्य वा
हुत्वा पंचसहस्रमेति नियतं सर्वं मनोवांछितम् ॥
ताम्बूलं कुसुमं सुगन्धमथवा वस्त्रं प्रदत्त्वाथवा
सत्तावातितमेव सिद्धिसहिता कामं जगन्मोहयेत् ॥

ऊपर लिखे मंत्रको शुद्धभावसे ५००० जपै। और दशांश ५०० होम करै। होम पलासके फूलोंसे तथा कदम्बके फलोंसे होम करै तो सिद्धि होती है और यदि पान या फूल अथवा और कुछ सुगन्धित

वस्तु इनका होम करे और इस प्रकार ७ बार करै तौ संसारभी वशमें अवश्य होगा ॥

स्थाननिर्णयः ।

शम्भोरायतने चतुष्पथतटे नद्यां श्मशाने गिरौ मध्ये मन्त्रवरः करोति वशगामष्टौ महासिद्धयः । वश्याकर्षणमोहमन्मथमनःस्तम्भादयो हस्तगाः प्रायःप्राकृतसिद्धयश्च वशगाःप्राप्याःकवित्वादयः॥

महादेवके मठ अथवा चौराहेके बीच अथवा नदीके किनारे अथवा श्मशानके विषे इनमेंसे किसी एक स्थानमें बैठकर जप करनेसे सब काम सिद्धि होय । वशीकरण होता है,आकर्षण होता है तथा मोहनभी होता है । विशेष क्या कहैं यदि भली प्रकार सिद्धि किया जाय तो इस मंत्रसे वाक्सिद्धितक हो जाती है॥

वशीकरणप्रयोग ।

नीचे लिखे यंत्रको भोजपत्रपर गोरोचनसे लिखे पूजन करे पुष्प चढावे और फिर शहतमें धर दोगे तो शत्रु वशीभूत होगा ॥

यंत्र ।
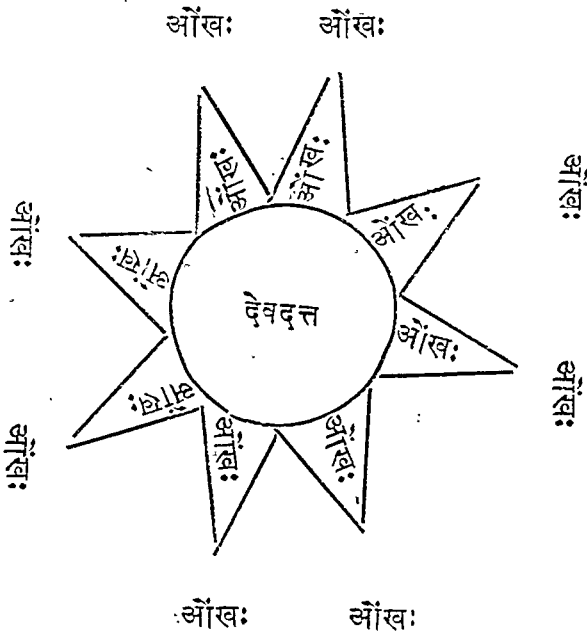
प्रेतविमोचनविधि ।

नीचे लिखे यंत्रको कागजपर स्याहीसे लिखना फेर उसे रूईमें लपेटके घृतमें भिगोकर चौका (जमीन लीपना) देकर(चौका एक बालिस्त भर जगहमें लगाना) उस बत्तीका इस चौकेमें दीपक जलाना और फेर रोगी (जिसपर प्रेत चढाहै) के सन्मुख दीपकको बुझादो और फेर उसको दिखाके बालदो (प्रयोजन यहहै कि रोगी देखता रहे) ऐसा करनेसे प्रेत छोडकर भागजावेगा यदि पुरुषको प्रेत

चढा हो तो ऊपर नाम स्त्रीका लिखना यदि स्त्रीको प्रेत चढा हो तो ऊपर नाम पुरुषका और नीचे स्त्रीका लिखना प्रयोजन यह है कि जिस पुरुषको जो प्रेत स्त्री हो तो उस रोगी पुरुषका नाम नीचे और प्रेतरूपिणी स्त्रीका नाम ऊपर यदि स्त्रीको पुरुष प्रेत हो तो स्त्रीका नाम नीचे और प्रेत पुरुषका नाम ऊपर लिखो ऐसा कर यंत्रमें शेष पूर्ववत् करके दिखानेसे प्रेत भागेगा ॥

प्रेतविमोचनबुदुनक्त ।

य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:
य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:
य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:
य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:
य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:
य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:
य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:	य:बुदु:

इस यंत्रको जुमेके दिन यदि गलेमें बांधे तो फिर मुकद्दमामें जीत होती है अर्थात् अपराधी छूटता है परंतु नीचे उसका और उसकी माताका नाम लिखे ।

यंत्र ।

३४	३३८	३३३	या हाफीज
३३८	३३२	३३३	या हाफीज
३३५	३३७	३३७	११
या हाफीज	या हाफीज	११	॥

१६	२	सुवार
२	५।१	हे
अज	कुंन	मलमा

इस यंत्रको धोकर पीनेसे पेटका दर्द तत्काल आराम होगा ॥

१	४	४४	८
४५	७	२	४६
६	५२	४६	३
४८	४	५	४३

यह यंत्र दोनों प्रकारकी बवासीरको नाश करता है ॥

१३	१६	७९	६
१८	७	१२	१७
८	२१	१४	१२
१५	१०	९	१०

इस यंत्रको जिसके मसाणका रोग हो उसके बांधो ॥

३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१

यह यंत्र जिसके दरवाजेपर गाढ दिया जावे वहां कलह हो ॥

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

इस यंत्रको बांधनेसे ऊपर वासियोंका भय नहीं रहता जो प्रायः स्त्रियोंको हुआ करता है ॥

दाढके दर्दका मंत्र ।

ॐ नमो आचाय नूनाय स्वाहा ॥

प्रथम इस मंत्रको कागजपर लिखकर कील मध्यका यकारपर गाड़दो और जिस मनुष्यकी दाढ दुखती हो उससे कहो कि यदि तुम्हारी दाहिनी (सीधी) दाढ दुखती हो तब बायें हाथकी अंगुली अंगूठेसे पकड़ लो यदि बांई दाढ दुखती हो तब सीधे हाथसे पकडो और तुम इस मंत्रको सातबार पढकर फेर उस कीलको ठोक दो और रोगीसे कहो कि वह थूक दे (जमीनमें) और फेरभी इसी प्रकार करो सात वार तक निश्चय दाढका दर्द जावेगा ॥

नीचे लिखे इस यंत्रको जिसके शीतला निकली हों बाजू (दण्डहस्त) में बांध दो तब विशेष जोर नहीं करैगी यंत्र यह है ॥

१	२१६९	११	८
१२	७	२	१२६८
६	९	३१७१	३
३१७	४	५	१०